



॥ श्री सीता माता की पावन कथा ॥
॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री सीता माता की पावन कथा ॥

माता सीता सनातन धर्म में त्याग, पतिव्रता, धैर्य, करुणा और शक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति मानी जाती हैं। वे भगवान श्रीराम की अर्धांगिनी तथा माता लक्ष्मी का अवतार हैं। उन्हें जानकी, वैदेही, मैथिली और भूमिजा जैसे अनेक नामों से भी जाना जाता है।

माता सीता का प्राकट्य

मिथिला के राजा जनक एक बार यज्ञ के लिए भूमि की स्वयं हल से जुताई कर रहे थे। उसी समय हल की नोक एक स्वर्ण पात्र से टकराई। जब राजा जनक ने उसे खोला, तो उसमें एक दिव्य कन्या विराजमान थीं। राजा जनक ने उस कन्या को ईश्वर का वरदान मानकर अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार किया। पृथ्वी से प्रकट होने के कारण उनका नाम "सीता" पड़ा तथा वे भूमिजा और जानकी कहलायीं।

स्वयंवर और श्रीराम से विवाह

राजा जनक ने प्रण किया कि जो वीर भगवान शिव के दिव्य धनुष को उठाकर उसकी प्रत्यंचा चढ़ाएगा, उसी से सीता का विवाह होगा। अनेक राजा और योद्धा प्रयास करते रहे, परंतु कोई सफल न हुआ। महर्षि विश्वामित्र के साथ मिथिला पहुँचे अयोध्या के राजकुमार श्रीराम ने सहज भाव से शिवधनुष उठाकर उसे भंग कर दिया। यह देखकर राजा जनक अत्यंत प्रसन्न हुए और माता सीता का विवाह श्रीराम से संपन्न हुआ। उसी अवसर पर लक्ष्मण-उर्मिला, भरत-माण्डवी तथा शत्रुघ्न-श्रुतकीर्ति का भी विवाह हुआ।

वनवास

जब कैकेयी के वरदान के कारण श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास मिला, तब माता सीता ने राजमहल के समस्त सुखों का त्याग कर अपने पति के साथ वन जाने का निश्चय किया। उन्होंने कहा कि जहाँ पति हैं, वहीं पत्नी का वास्तविक घर है। लक्ष्मण भी उनके साथ वन गए।

रावण द्वारा हरण

वनवास के दौरान शूर्पणखा के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए रावण ने मारीच को स्वर्ण मृग का रूप धारण करने भेजा। माता सीता उस मृग को देखकर मोहित हुई और श्रीराम से उसे लाने का आग्रह किया। जब श्रीराम मृग के पीछे गए और लक्ष्मण भी उनकी खोज में चले गए, तब रावण साधु का वेश धारण कर आया। भिक्षा माँगने के बहाने उसने माता सीता का हरण कर लिया और उन्हें लंका की अशोक वाटिका में ले गया।

अशोक वाटिका में धैर्य

लंका में रहते हुए भी माता सीता ने कभी रावण का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपने सतीत्व, धर्म और श्रीराम के प्रति अटूट विश्वास को बनाए रखा। वे निरंतर श्रीराम का स्मरण करती रहीं। इसी बीच भगवान हनुमान समुद्र पार करके अशोक वाटिका पहुँचे। उन्होंने श्रीराम की मुद्रिका माता सीता को देकर उनका संदेश सुनाया। माता सीता ने हनुमान को अपना चूड़ामणि देकर श्रीराम के लिए पहचान का चिन्ह भेजा।

लंका विजय

भगवान श्रीराम ने वानर सेना के साथ समुद्र पर सेतु का निर्माण कराया और लंका पर चढ़ाई की। भीषण युद्ध में रावण का वध हुआ तथा माता सीता को मुक्त कराया गया।

अग्नि परीक्षा

युद्ध के उपरांत माता सीता ने अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए अग्निदेव को साक्षी मानकर अग्नि में प्रवेश किया। अग्निदेव ने उन्हें पूर्णतः निष्कलंक घोषित कर श्रीराम को सौंप दिया। यह उनकी पवित्रता और सत्यनिष्ठा का प्रमाण माना जाता है।

वाल्मीकि आश्रम

राजधर्म के पालन हेतु श्रीराम ने लोकमत का सम्मान करते हुए माता सीता को महर्षि वाल्मीकि के आश्रम भेज दिया। वहीं माता सीता ने दो तेजस्वी पुत्रों—लव और कुश—को जन्म दिया। महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें वेद, शास्त्र, धनुर्विद्या और रामकथा का ज्ञान प्रदान किया।

गई। इस प्रकार माता सीता अपने वास्तविक स्वरूप में पुनः पृथ्वी में समा गई।